IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

# बालाघाट जिले में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन एवं मूल्यांकन

**राजेश बोरकर**
शोधार्थी अर्थशास्त्र
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. उमेश कुमार दुबें**
प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय कन्या महाविद्यालय, राझी
जबलपुर (म.प्र.)

**शोध सारांश :–**

आबादी किसी देश का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है, जिससे न केवल प्राकृतिक संसाधानों का सदोपयोग संभव हो पाता है न ही कुशल, प्रशिक्षित एवं मेहनती, श्रम शक्ति द्वारा आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। यही कारण है कि किसी देश की वास्तविक ताकत उसकी मानव शक्ति समूह की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। साक्षरता मानव विकास और जीवन की गुणवत्ता का एक सूचकांक है। कम साक्षरता से आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक विकास में रूकावट आती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 73 प्रतिशत लोग साक्षर थे। यद्यपि यह प्रतिशत 1901 की साक्षरता का 14 गुणा एवं 1951 का 4 गुना है परन्तु देश की जनसंख्या के वृहद आकार के कारण विश्व में सर्वाधिक निरक्षरों की संख्या भारत में पाई जाती है। ये देश के परम्परावादी, अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले पिछड़े क्षेत्रों में पाई जाती है। अनुसूचित जनजातियां हिन्दू समाज के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से हीन जाति समूह को प्रदर्शित करती है, इनमें अधिकांश श्रमिक, छोटे किसान और दस्तकार हैं। इनके भौगोलिक वितरण से देश में गरीबी के प्रादेशिक परिमाण का अंदाज लगाया जा सकता है। अनुसूचित जातियां एक विषम जातिय समूह है, इसमें 542 जातियां शामिल है। भारत में स्वतंत्रता के समय अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 5.17 करोड़ थी, जो वर्ष 1981 में बढकर 10.47 करोड़ और वर्ष 2011 में 20.14 करोड़ (जो कुल जनसंख्या का 16.63 प्रतिशत) हो गई है।

**मुख्य शब्द –** महिला सशक्तिकरण, अनुसूचित जनजाति, अस्पृशंयता, मूल्यांकन, मानव विकास, आर्थिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, नारी प्रगति।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. भल्ला, एल. आर. 2021, राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर पृ. सं. 1–30
2. दाधिच, पी.एन., हानोका, 2011, क्षेत्रिय अस्थायी नगरीय अभिवृद्धि, जयपुर–जर्नल, 18
3. डिस्ट्रीक्ट सेन्सुई हैण्डबुक, 2011, राजस्थान जिलेवार जनसंख्या पुस्तक, पृ. सं. 15–16
4. एफ.एस.आई., 2015, मध्यप्रदेश राज्य वन प्रतिवेदन, 2015
5. बालाघाट विकास प्राधिकरण, बालाघाट, मास्टर प्लान विकास योजना,
6. खान, एस.एच, 2013 राजस्थान का मध्यकालीन इतिहास, जयपुर पब्लिकेशन, पृ. सं. 32–50
7. डॉ. एम.डी. मौर्य, सांस्कृतिक भूगोल, पृ. सं. 5
8. ओम प्रकाश जोशी, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा राज प्रकाशन, जयपुर पृ. सं 2–4
9. ब्रटून, टी.एल. वर्ष 1970, एंटरटेनमेंट, रिसर्च एण्ड प्लानिंग, अनविन एण्ड एलन, लंदन

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

10. एस.एन. चिब, 1980, पर्यटन नीति– एक राजनीतिक अपराध पूर्वी अर्थशास्त्री
11. सुहिता चोपडा, 1991 ई, "भारत में पर्यटन और विकास" आशीष पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
12. .दुलार, रवीन्द्र कुमार, वर्ष–2004, राजस्थान और धार्मिक पंर्यटन केन्द्र, नवजीवन प्रकाशन टोंक
13. सिंह, जगदीश, पर्यटन व्यवसाय तथा विकास, तेज प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. आर्थिक एवं सांख्यिकी रिपोर्ट, 2011,